जब से उसकी डिप्टी कलेक्टर पद पर नियुक्ति हुई थी, ज्वाईन करने के बाद पहली शिक्षा उसके पिता ने यह दी थी कि पंकेश, यह पद कांटों का ताज है फिर भी ईमानदारी से नौकरी करना। बेवजह किसी को परेशान मत करना, कभी रिश्वत लेने की कोशिश मत करना। उसने भी अपने पिता की भावना की कद्र करते हुए कहा था- बाबूजी, मैं बड़ी ईमानदारी से नौकरी करूंगा, कभी रिश्वत या भ्रष्टाचार नहीं करूंगा, आपके आदेश का पालन हर समय करूंगा।

वे क्लीन बोल्ड हो गए

कहानी

बस मुझे तुमसे यही उम्मीद है। उस दिन बाबूजी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा था। बाबूजी खुश हुए थे। बाबूजी के इस आदेश का पालन उसने कई सालों तक किया था। बल्कि उनकी निगाह में वह खरा उतरा भी था। तब बाबूजी जहां भी जाते थे, उसकी ईमानदारी की चर्चा किया करते थे। उसकी ईमानदारी पर उन्हें अभिमान था।

उसके अधीनस्थ जो बाबू फाईल लेकर आता उस पर वह हस्ताक्षर कर देता था। इस कारण बाबू भी उससे खुश रहने लगे। भले ही वह बाबू संबंधित से रिश्वत लेता था, जो रिश्वत नहीं देता था, वह उसकी फाईल अटका कर रखता था। ऐसे में संबंधित व्यक्ति शिकायत करने उसके पास आता था। तब वह उसी बाबू का पक्ष लेकर फिर उसी के पास भेज देता था। मगर उस दिन तो हद हो गई। उसके अधीनस्थ एक बाबू ने उसकी ईमानदारी की धज्जियां उड़ा दी। उस बाबू ने फाईल रोक दी। जिसकी फाईल रोकी वह उसके पास आकर बोला- आपने ऊपर से ईमानदारी का चेहरा लटका रखा है, मगर भीतर से कितने भ्रष्ट और रिश्वतखोर हैं, जिसका पता आज चला है मुझे।

ए मिस्टर आप क्या कहना चाहते हैं? थोड़ा नाराज होकर वह बोला था।

वही कह रहा हूं जो मुझे बहुत पहले ही कहना चाहिए था।

ए मिस्टर क्या मतलब है आपका?

मतलब यह है कि आपने मेरी फाईल पर हस्ताक्षर अभी तक नहीं किये हैं।

मेरे पास कोई फाईल पेंडिंग नहीं है। इंकार करते हुए वह बोला- जैसे ही जो बाबू फाईल भेजता है हस्ताक्षर करके संबंधित को भिजवा देता हूं।

तब मेरी फाईल कहां गई?

मुझे क्या मालूम, संबंधित बाबू से पूछो?

संबंधित बाबू ने ही कहा है कि फाईल आपके पास महीने भर पहले से ही पड़ी हुई है, जब तक आप पैसे नहीं देंगे, साहब फाईल पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे।

ऐसा कहा है संबंधित बाबू ने।

हां, क्या मैं झूठ बोल रहा हूं? बुला लीजिए संबंधित बाबू को।

क्या नाम है उस बाबू का?

पंकज बाबू।

तब पंकेश ने घंटी बजाई तत्काल चपरासी गणेश हाजिर हुआ उससे बोला- पंकज बाबू को भेजना। चपरासी चला गया। आगे पंकेश बोले- अभी हो जाता है दूध का दूध व पानी का पानी। क्षण भर बाद पंकज बाबू केबिन में उपस्थित हो गया। पंकेश ने कहा- क्यों पंकज बाबू, इन साहब का कहना है मैंने इनकी फाईल दबा रखी है। इनका यही आरोप है। जबकि मैं हर एक बाबू की फाईल पर हस्ताक्षर कर तत्काल भिजवा देता हूं। इनकी फाईल कहां गई?

सर आपके पास होगी? पंकज बाबू ने सहजता से उत्तर दिया।

मेरे पास, मैं फाईलों पर तुरंत हस्ताक्षर कर संबंधित बाबू को लौटा देता हूं।

मगर आज तक इनकी फाईल मेरे पास नहीं आई। पंकज बाबू ने कहा।

क्या इनकी फाईल जमीन खा गई? पंकेश जरा नाराजगी से बोला।

मुझे नहीं पता सर?

जाओ फाईल को ढूंढो, कहीं आलमारी में रखी होगी। सर पूरी आलमारी छान मारी। इनकी फाईल कहीं नहीं मिली। मतलब यह हुआ कि मैं खा गया। नहीं सर, मैं क्यों यह बात कहूंगा?

तब इनकी फाईल कहां गई?

पता नहीं सर, जहां तक मेरा ख्याल है फाइल आपकी आलमारी में होगी।

ढूंढों खुद ही ढूंढ लो। तब पता चल जाएगा कि कौन ईमानदार है? नाराजगी से पंकेश बोले- पंकज बाबू आलमारी टटोलने लगे। थोड़ी देर तक वे उनकी आलमारी टटोलते रहे, तब पंकेश बोले- जब मैंने कहा, मेरी आलमारी में फाईल नहीं है, तब भी यकीन नहीं हो रहा है। ढूंढों मेरी आलमारी में फाईल। मगर फाईल उसी आलमारी से मिली। पंकेश को आश्चर्य हुआ। पंकज बाबू अलमारी से फाईल निकालकर देते हुए बोले- सर, यह फाईल आपकी आलमारी से ही मिली है। मगर मेरी आलमारी में यह कैसे आ गई है?

मुझे क्या मालूम सर। पंकज बाबू ने इंकार करते हुए कहा। पंकेश ने बहस न करते हुए फाईल पर हस्ताक्षर कर संबंधित के सुपुर्द कर दी। फाईल लेकर वह व्यक्ति तो चला गया, पहले तो पंकेश ने पंकज बाबू को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा फिर बोला- यह फाईल मेरी आलमारी में कैसे पहुंच गई?

मुझे क्या मालूम सर? इंकार करते हुए पंकज बाबू बोला।

ठीक है, गलती मेरी है, यही कहना चाहते हो ना, जाओ बैठकर काम करो। साहब के इस कथन के साथ पंकज बाबू तो अपनी टेबिल पर बैठ गये मगर उस दिन उसकी ईमानदारी पर चोट पहुंचा दी। विश्वास के साथ विश्वासघात किया।

निश्चित शरारत पंकज बाबू की रही थी, यह सब उसे बाद में मालूम पड़ा, उसने उस फाईल को तरकीब से उसकी आलमारी में छिपा दी थी। पंकज बाबू की ऐसी जानकारी मिली कि वह हर फाईल पर खूब पैसा लेता है। एक दिन उन्होंने अपने केबिन में बुलाकर डांटते हुए कहा- यह मैं क्या सुन रहा हूं आपको बारे में।

क्या सुन रहे हैं सर। पंकज बाबू ने हाथ जोड़कर कहा था मगर पंकेश की आंखों में क्रोध की चिंगारियां जल रही थी।

बिना रिश्वत लिये कोई फाईल निपटाते नहीं हो। रिश्वत के लिए लोगों को परेशान करते हो।

नहीं सर, यह झूठ है। जिस दफ्तर में आप जैसे ईमानदार अधिकारी हो, भला बताईये, मैं क्यों किसी को परेशान करूंगा।

पंकज बाबू ने व्यंग्य से कही यह बात वह समझ गया। नाराजगी से बोला- झूठ बोलते शर्म नहीं आती, आईन्दा किसी को पैसों के लिये परेशान किया तो ठीक नहीं है, जाईये बैठकर काम कीजिए। पंकेश ने अब अपने आपको इसी तरह से बदल लिया कि वह अधीनस्थ हर बाबू से सतर्क हो गया। मगर अवसर-अवसर पर पंकज बाबू की हरकतें चलती रही।

इधर पंकेश की ईमानदारी से सभी बाबू खफा रहने लगे। उसको बात-बात पर परेशान करने लगे। डांटना, फटकारना और अपमानित करना उनका काम हो गया था। एक दिन कलेक्टर ने कहा ओ हरिश्चन्द्रजी, ये चोला अपने शरीर से उतारो और हर महीने अपने कार्यालय से 10 हजार रुपये का लिफाफा भिजवाने की व्यवस्था करो।

सर मैं कहां से दूंगा। मैं तो किसी से एक पैसा भी नहीं लेता हूं। इंकार करते हुए उसने कहा। किस बेवकूफ ने तुम्हें अपाईमेंट दिया। पद पर रहते हुए किसी से पैसा नहीं लेते हो, खुद लो और हमें भी लिफाफे पहुंचाओ। नहीं पहुंचाओगे तो उसका परिणाम भी भुगतना पड़ेगा।

माफ करें सर, मेरा जमीर यह सब करने के लिये गवाही नहीं देता है।

मिस्टर जमीर को मारेगे तभी इस दुनिया में जी सकोगे। मुझे हर हालत में दस हजार रू. महीना चाहिए। समझे। इस तरह कलेक्टर धमकी देकर चले गये। तब से वह बड़ी दुविधा में पड़ गया। इधर अधीनस्थ बाबुओं से परेशान, उधर वह कलेक्टर से आए दिन प्रताड़ित होने लगा। इस भ्रष्ट व्यवस्था में उसका जीना दुश्वार हो गया। चारों तरफ से उस पर आक्रमण होने लगे। मगर पिता की सीख में उसने ईमानदार चेहरा बचाये रखा। मगर वह भी अपने को आखिर कब तक बचाये रखता।

एक दिन पंकेश की भी इस भ्रष्ट व्यवस्था में मजबूरीवश झुकना पड़ा। अब वह खूब रिश्वत लेने लगा। वह किसी भी फाईल को बिना रिश्वत के निपटाता नहीं था। फिर कलेक्टर को हर महीने लिफाफे भिजवाने लगा। अब कलेक्टर भी उससे खुश रहने लगे। उसको कुछ भी नहीं कहते। बाबू भी अब उनको कुछ नहीं कहते। इस तरह एक ईमानदार अधिकारी भ्रष्ट व्यवस्था का पुर्जा बन गया। तब उनके पिता एक दिन नाराज होते हुए बोले- पंकेश तुमने यह अच्छा नहीं किया। भ्रष्ट व्यवस्था में तुम भी शामिल हो गये।

क्या करता बाबूजी, इस भ्रष्ट व्यवस्था ने मुझे ईमानदारी से जीने नहीं दिया।

जीने तो तब देती, परंतु तुमने संघर्ष नहीं किया। संघर्ष के पहले ही समर्पित हो गये।

नहीं बाबूजी, संघर्ष मैंने बहुत किया मगर...! मगर इस भ्रष्ट व्यवस्था से हार गये। बीच में ही उसके पिता बोले।

क्या करूं हालात ने मजबूर कर दिया। जीना दूभर कर दिया।आज तुम्हें यह सब अच्छा लग रहा है, मगर भविष्य में इसका परिणाम बहुत खराब मिलेगा। पिता ने यह कहकर अपनी नसीहत दी। तब पंकेश बेफिक्र होकर बोला- भविष्य की चिंता मैं नहीं करता वर्तमान में जीना चाहता हूं। ठीक है, अभी एहसास नहीं होगा। जब इसका परिणाम मिलेगा, तब जाकर भीतर ही भीतर पछतावा होगा, पिता ने अपनी बात का पटाक्षेप कर फिर कभी इस संबंध में चर्चा नहीं की। अब पंकेश रिश्वत का खेल खेलने के लिये स्वतंत्र हो गया। उस पर कोई नियंत्रण नहीं था वह रिश्वत के मामले में रिकार्ड तोड़ता रहा। जो कभी रिश्वत लेना क्या, छूना भी पाप समझता था वह रिश्वत के दल-दल में धंसता चला गया। रिश्वत का यह खेल उसको अब रास आने लगा। उसके परिणाम को उसने कभी नहीं सोचा। रिश्वत के मामले में वह एक सफल खिलाड़ी बन चुके थे। मगर एक दिन लोकायुक्त ने उसे 10 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए पकड़ लिया। जिस रफ्तार से उसने रिश्वत को हथियार बनाया, उसी हथियार से वह बोल्ड हो गया।

- रमेश मनोहरा

अपना गांव

अपना गांव है अपना ठिकाना
मिलना जुलना खिलना खिलाना
●●●●
गंदे नाली नाले नही हैं
घास फूस को छिलना छिलाना
●●●●
रोज सिलसिला मौतों का है,
मंजर छलने वालो को।
●●●●
चोर उच्चके नहीं लफफगें
बदमाशों को चेत दिखाना
●●●●
बच्चे सारे स्कूल जाते
चार चिरौंजी गांव सीखाना
●●●●
सियान सजन खुश हैं सब रहते
परम्पराही ग्यान पिलाना
●●●●
भेद नहीं बेटी बेटे में
दोनों में भरपूर खजाना
●●●●
नहीं अदालत गांव में पोलिस
झेलम राग है मंडई समाना
●●●●
है अलाव सरगी हलदू से
गोठ बात संस्कार जिलाना
●●●●
साफ सफाई हरियाली हम
दूजे गांव में रिझना रिझाना।
●●●●
बेटी पढ़ाओ बेटी बढ़ाओ
इस जादू में निभना निभाना
●●●●
मेहनत की पूजा तल्लिनता
आलस को नही तनिक बिठाना
●●●●
रिश्वतखोर कमीशन खोरी
पंचायत से कफन दिलाना

- जोगेन्द्र महापात्र "जोगी"
जगदलपुर

हम नदियां हैं लल्ला!

व्यंग्य

लल्ला पहचाना ? हम नदियाँ हैं। तुम्हारे ही शब्दों में तुम्हारी जीवन दायिनी। कभी जीवन दायिनी रही होंगी हम,अब तो तुमने जी भर प्रदूषित करके हमें मृत्यु दायिनी बना दिया है। मृत्यु दायिनी ही नहीं, मृत्यु गामिनी भी बना दिया है। तुम ही हमारे प्रदूषित जल का पान करके मर नहीं रहे हो। हम भी धीरे-धीरे मर रही हैं। हमारे अंदर रहने वाले प्यारी-प्यारी रंग-बिरंगी मछलियाँ, मेंढक, सीप, घोंघे और जंगल के निर्दोष पशु-पक्षी भी हमारा जल पान करके मृत्युगामी हो रहे हैं।

कभी हम उछलें मारती,किल्लोल करती,कलकल-छलछल मस्ती में बहती,चौड़ी पाट वाली शुभ-स्वच्छ,सुंदर सरिताएं हुआ करती थीं जिसके किनारे सुंदर हरीतिमा युक्त वन,उपवन, कुंज और मधुवन शोभा पाते थे। आज देखो तुम्हारे तथा तुम्हारे कारखानों,फैक्टरियों के जहरीले अवशेष ने हमें क्या से क्या बना दिया ? हमारा मदमाता यौवन ही छीन लिया। बरसात के बीतते-बीतते देख रहे हो आज हम सूखी ठठरी ठाठ हुई रेत की सूखी शैया पर बाण-विद्ध भीष्म की तरह व्याकुल मृत्यु की राह देखती पड़ी हैं कि कब हमारे अभिशप्त जीवन का उत्तरायण हो और हम विदा हों।

तुम हमें माता कहने का दिखावा करते हो, गंगा माता,यमुना माता,नर्मदा मैया लेकिन मानते नहीं हो। मानते तो रात-दिन प्रदूषण का जहर नहीं पिलाते। अपनी माता की अपने ही हाथों से हत्या नहीं करते। हमने माता का दायित्व पूरा करते हुए अपनी छाती का दूध सम पवित्र जल पिलाकर तुम्हें पोषित किया। तुम्हारे खेतों और बाग-बगीचों को सींचकर भोजन के लिए तुम्हें अन्न, फल-फूल, औषधियां, वस्त्र और लकड़ियाँ दीं। तुम्हारे रहने के लिए विराट,सुंदर सर्वसुविधायुक्त नगर बसाए। बदले में तुमने क्या दिया? प्रतिदिन उद्योगों से निकलने वाले विष का पेय और जहरीले प्लास्टिक का भोजन। वाह बेटे,वाह। धन्य हो तुम। दूध का अच्छा कर्ज चुकाया।

कितने भी विराट कुंभ आयोजित कर लो,मेले-ठेले सजा लो, हमारे जल में डुबकियां लगा लो,सच जानो, इस पाप का मोचन तो होना ही नहीं है। कितने अखाड़ों के साधु बुला लो,संतों और नागाओं से पवित्र मंत्रोच्चार करवाकर शंख फूंकवा लो। मातृ-हत्या का घोर पाप जाएगा कहाँ? कैसी सन्तान हो तुम ? माता को मृत्यु के मुंह में धकेलकर पुण्य की कामना कर रहे हो ?

सुना है हमारी सफाई के लिए तुम राजकोष से करोड़ो-अरबों रूपये आबंटित कर रहे हो,सफाई अभियान चला रहे हो। अच्छी बात है लेकिन सफाई करने वाले सफाई के नाम पर खुद उस आबंटन की सफाई करने लग जाएँ तो ? तो दुर्गा सप्तशती के स्वर में स्वर मिलाकर यह कहना पड़ता है 'कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति।'

सुना है देश की हम बड़ी नदियों को आपस में जोड़ने की तुम्हारी योजना है। तुम्हारे वैज्ञानिक कहते हैं कि इससे देश हरा-भरा हो जाएगा,प्यासे खेतों को पानी मिलेगा,बिजली का उत्पादन होगा।

कितने सालों से बन रही तुम्हारी यह कागजी योजना ? कभी मूर्त-रूप क्यों नहीं ले पाई? असल में क्या है कि हम नदियों को जोड़ने के पहले तुम्हें अपने दिलों को जोड़ने की जरूरत है। देशहित के लिए जिस दिन तुम सबके दिल मिल जायेंगे,उस दिन इस देश और जनता-जनार्दन के लिए नया सवेरा होगा तब तक संसद और विधान-सभाओं में जूते-चप्पल चलने दो। एक दूसरे के लिए अपशब्दों के फूल बरसने दो। देश को धर्म,जाति-पाति और आरक्षण के नाम से धूं-धूं जलने दो।

शायद ऐसे ही लोकतंत्र की कामना की थी हमारे पूर्वजों और शहीदों ने। हमारा क्या ? हम तो कलियुग की नदियाँ हैं बेबस,मजबूर। अपनी औलादों के कर्मफल भोगती हुई। इसके अलावा हम कह और कर भी क्या सकते हैं लल्ला ?

- कस्तूरी दिनेश

भिक्षु बनने से रोका

घटना मगध राज्य की है। भगवान बुद्ध के समकालीन। वहां का एक भक्त सेठ होते हुए भी बड़ा विनम्र तथा सदाचारी हुआ करता था। उस सेठ की सर्वत्र प्रशंसा होती। अचानक सेठ को कारोबार में खूब लाभ हुआ, और दिनोंदिन लाभ होता ही गया। उसके धन में, संपत्ति में तेजी से वृद्धि हो गई। बड़ा सेठ बनते बनते वह अत्यंत अहंकारी हो गया। अनेक व्यसनों से घिर गया। उसके पुत्र भी यू टर्न लेकर पिता की तरह कुमार्ग पर चलने लगे। जब पिता को होश आया पुत्र बुरी तरह उद्दण्ड हो चुके थे। घर-परिवार में अशांति का राज हो चुका था।

सेठ बहुत ही परेशान हो गया। जब कोई रास्ता नहीं सूझा तो सब कुछ छोड़ छाड़कर भिक्षु बनने की ठान ली। भगवान बुद्ध की शरण में जाकर सारा वृत्तांत अक्षरशः सत्य कह दिया।

दयावान बुद्ध ने समझाया, तुम्हें भिक्षु बनने की कोई आवश्यकता नहीं। अपने परिवार व व्यापार में बने रहो। स्वभाव बदल लो। जीने की पद्धति में परिवर्तन करो। फालतू धन तथा संपत्ति गरीबों में बांटों। कुछ धर्म संस्थाओं को दान कर दो अहंकार त्यागकर विनम्र बन जाओ। दूसरों का अच्छा सोचो, अच्छा करो। तुम्हें अब तभी शांति मिलेगी... अभी भिक्षु बनने का विचार त्याग दो। मगध के इस सेठ ने बिल्कुल वैसा ही किया जैसा भगवान बुद्ध ने किया। उसका घर देखते ही देखते स्वर्ग जैसा हो गया।

-सुदर्शन भाटिया पालमपुर

लघुकथा

कबूतर

मैं सीढ़िया चढ़ कर हॉल में आया, तो मेरी नजर कबूतर पर पड़ी। हाल का दरवाजा खुला रह जाने पर न जाने कब कबूतर अंदर घुस आया था।

मैं हाल में बैठकर लिखाई-पढ़ाई करता था। गर्मी के दिन। पंखा चलाना पड़ता था। कहीं उड़ने पर पंखे से कट कटा न जाये, इस डर से उसे बाहर निकालने के लिए उसके पीछे भागा। लेकिन वह भागा नहीं। मेरे भगाने पर हाल में इधर-उधर होने लगा। और अंत में हाल में रखी खाट के पीछे जा छिपा। मैंने उसे हाल से बाहर निकालने के लिए खाट का सहारा लिया।

खाट को सरका सुरकाकर मैंने कबूतर को हाल से बाहर कर दिया।

बालकनी में गमले रखे थे। वह एक गमले के पीछे छिप गया। मैंने हाल का दरवाजा बंद कर लिया और पढ़ने लगा। कुछ देर बाद मुझे कुछ आवाज सुनाई पड़ी। मैंने हाल का दरवाजा खोला कोई नहीं ज्यों ही दरवाजा बंद करने को हुआ, मुझे कबूतर का ध्यान आया। मैंने गमले के पीछे जाकर देखा।

कबूतर नहीं था, उसके पंख बिखरे पड़े थे। मुझे समझते देर नहीं लगी कि बिल्ली आकर उसे खा गई थी।

कबूतर की हत्या बिल्ली ने की थी, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था, हत्यारा मैं हूं।

-किशन लाल शर्मा